E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2020; 2(2): 61-65
Received: 02-01-2020
Accepted: 04-02-2020

सुरेश कुमार दुग्गल
शोधकर्ता, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा व् असिस्टेंट प्रोफेसर, राजकीय महाविधालय, सेक्टर-14, करनाल, भारत।

डॉ. रविन्द्र
शोध-निर्देशक, असिस्टेंट प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा

Corresponding Author:
सुरेश कुमार दुग्गल
शोधकर्ता, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा व् असिस्टेंट प्रोफेसर, राजकीय महाविधालय, सेक्टर-14, करनाल, भारत।

अभिभावकों के दृष्टिकोण से बच्चों पर कार्टून धारावाहिकों का प्रभाव- एक अध्ययन

सुरेश कुमार दुग्गल, डॉ. रविन्द्र

सार: बच्चों की दुनिया सबसे खूबसूरत और रंगों से भरी होती है। दुखदर्द, जिंदगी के उतार-चढ़ावों और दुनियादारी से बेखबर बच्चे बेहद मासूम और साफ मन के होते हैं। चेहरे पर मुस्कान लिए, तोतली आवाज में कुछ-कुछ बोलकर किलकारी मारते बच्चे जब कूदकर गोद में आते हैं तो अनायास ही दिन भर की थकावट दूर हो जाती है। उनके अजीबो-गरीब सवाल दौड़ती भागती जिंदगी से ध्यान हटाकर मन को सुकून देते हैं, क्योंकि वे फायदे और नुकसान के गुणा भाग से परे छोटी-छोटी खुशियां बांटते हैं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बच्चों के मन की इसी चंचलता को समझते हुए कार्टून धारावाहिक देखने से उनके दिल-दिमाग पर पड़ने वाले असर का विश्लेषण करना है। अभिभावकों के दृष्टिकोण से बच्चों पर कार्टून धारावाहिकों का प्रभाव देखना है। इसके लिए अभिभावकों पर सर्वेक्षण विधि (प्रश्नावली) द्वारा शोध किया गया और इससे जो निष्कर्ष निकला व् जो एकत्रित आंकड़े सामने आए, वो दर्शाते हैं कि बच्चों पर कार्टून धारावाहिकों का काफी प्रभाव पड़ता है।

यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया के बाल मनोवैज्ञानिक एलिसन गोपनिक के अनुसार, बच्चों का दिमाग एक कुशल वैज्ञानिक की तरह काम करता है। वे हमेशा कुछ नहीं संभावनाएं तलाशने और सीखने को आतुर रहते हैं। बड़े होने के बाद भी जिन लोगों में ऐसी बाल सुलभ उत्सुकता बनी रहती है, वे ही सफल वैज्ञानिक और रिसर्च स्कॉलर बनकर समाज को अपना महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। [1]

प्रस्तावना

बचपन शैतानियों से भरपूर होता है, उस समय न कल की फिक्र होती और न ही आज की चिंता। बचपन मानव जीवन का सबसे खूबसूरत शुरुआत होती है, लेकिन पिछले कुछ सालों में बचपन के मायने बदल गए हैं। भागदौड़ से भरी जिंदगी में बचपन गुम होता जा रह है। आज-कल बच्चों को दादी-नानी की कहानियां भी इतनी अच्छी नहीं लगतीं। और न ही वे मेले आदि में जाने की जिद करते हैं। अब उनमें वो बचपन नहीं रह गया है। क्योंकि गिल्ली डंडा, चोरी सिपाही, पकड़म पकड़ाई की जगह टीवी, कार्टून धारावाहिकों, स्मार्टफोन, कंप्यूटर और वीडियो व मोबाइल गेम्स ने ले ली है। आज मां-बाप के पास बच्चों के लिए समय का आभाव है। वे बच्चों को टीवी और कार्टून देखने में लगा देते हैं, या उनके हाथ में स्मार्टफोन थमा देते हैं जिससे बच्चा घर की चारदिवारी में ही कैद हो कर रह जाता है। ऐसे में उसे बाहर की दुनिया की समझ लगभग न के बराबर होती है। व्यस्त दिनचर्या और ज्यादा से ज्यादा पैसा कमाने की जुगत में मां-बाप के हाथों ही बच्चों की चंचलता कहीं न कहीं खत्म हो होती जा रही है।

21वीं सदी में सोशल मीडिया के आने से बच्चों का सामाजिक व्यवहार काफी प्रभावित हुआ है। स्मार्टफोन हाथ में होने से बच्चों को भी अब यूट्यूब, फेसबुक, व्हाट्सऐप, इंस्टाग्राम, टिकटॉक आदि की आदत पड़ गई है। उनके दोस्त तो हैं, लेकिन अब उनके साथ बाहर जाकर नहीं खेला जाता। बल्कि वे सोशल नेटवर्किंग साइट के जरिए सूचनाओं और जानकारियों का आदान-प्रदान करने में व्यस्त रहते हैं। यही सब आज शिक्षित करने और मनोरंजन और उनको वस्त रखने का साधन भी बन गया है। यही कारण है कि आज अकसर छोटे-छोटे बच्चे भी स्मार्टफोन के लिए जिद करते नजर आते हैं।

एसोचैम द्वारा किए गए सर्वेक्षण के मुताबिक, जितने बच्चे फेसबुक का इस्तेमाल कर रहे हैं, उनमें से 73 प्रतिशत बच्चों की उम्र 8 से 13 साल के बीच है। इनमें से भी अधिकांश बच्चों के मां-बाप नौकरीपेशा हैं, जो उन्हें समय नहीं दे पाते। इसलिए स्कूल से घर आने के बाद बच्चों का ज्यादातर समय टीवी पर कार्टून धारावाहिक देखने में बीतता है। मां-बाप को भी लगता है कि बच्चे कार्टून देखकर नई-नई बातें सीखते हैं। [2]

अभिभावक भी खुद ही बच्चों को कार्टून धारावाहिक देखने के लिए कह देते हैं। ऐसा करने से जहां उन्हें खुद को वक्त देने का मौका मिल जाता है, वहीं बच्चों को बार-बार देखने संभालने से भी छुट्टी मिल जाती है। क्योंकि कार्टून धारावाहिक देखने के लिए बच्चे एक तरफ बैठ जाते हैं, उछल कूद और शरारतें नहीं करते। ऐसा होते-होते बच्चों को कार्टून देखने की आदत पड़ जाती है। फिर वे कार्टून देखने बिना नहीं रहते। मना करो तो जिद करने लगते हैं, रोना शुरू कर देते हैं। यहां तक कि उनका खाना-पीना, पढ़ना आदि कोई भी काम कार्टून देखे बिना नहीं होता। अभिभावकों को भी बच्चों से कुछ काम करवाना हो तो बदले में उन्हें टीवी और कार्टून देखने की इजाजत देनी पड़ती है। ऐसे में अगर कोई कहे कि आज बच्चों की चंचलता, सामाजिकता और व्यवहारिकता में बदलाव आ गया है, तो इसके लिए मुख्यतः अभिभावक ही जिम्मेदार हैं। क्योंकि उन्हें बच्चों की जरूरतें पूरी करना और उन्हें हर संभव सुविधाएं देना तो नजर आता है, लेकिन उन सुविधाओं का बच्चों पर पड़ने वाला प्रभाव नहीं। जबकि आजकल टीवी पर प्रसारित होने वाले कार्टून धारावाहिक बच्चों पर काफी असर डालते हैं और यह प्रभाव किस तरह का होता है ? कैसे होता है? इसी को जानने के लिए अभिभावकों के दृष्टिकोण से सोचकर समझकर प्रस्तुत अध्ययन किया गया है।

साहित्य की समीक्षाः बांग्लादेश में हुए अध्ययन के अनुसार 10 प्रतिशत लोग यह सोचते हैं कि कार्टून धारावाहिकों में कोई भी विषयवस्तु ऐसी नहीं दिखाई नहीं जाती, जो बच्चों के लिए हानिकारक हो। 14 प्रतिशत लोग यह मानते हैं कि उन्होंने यह सोचा ही नहीं कि कार्टून धारावाहिकों में कुछ नकारात्मक तथ्य दिखाए ही नहीं जाते। न ही ये सोचा कि वह बच्चों पर कोई प्रभाव भी डालते हैं। 38 प्रतिशत लोग इस बात से सहमत हैं कि स्कूबी डू, पॉवरफुल गर्ल्स, बेन-10 आदि धारावाहिक प्रसारित नहीं करने चाहिएं, क्योंकि यह धारावाहिक आक्रामकता दिखाते हैं। 51 प्रतिशत इस बात से सहमत है कि आक्रामकता वाले धारावाहिक कार्टून बनाकर मजाकिया अंदाज में दर्शाये जाते हैं, जिनका बच्चे अनुसरण करते हैं। [3] पाकिस्तान में हुए एक अध्ययन के अनुसार, कार्टून चरित्रों के माध्यम से विज्ञापन दर्शकों को बहुत अधिक प्रभावित करते हैं एवं कार्टून चरित्र जो कहता है, उससे विज्ञापन में दिखाए गए उत्पाद और ब्रांड को पहचान मिलती है। [4] इन्दौर में हुए एक अध्ययन के अनुसार, बच्चों की खरीदारी मीडिया से प्रभावित होती है। बच्चों को सूचनापट्ट, होर्डिंग या कहीं और कोई सूचना या जानकारी लिखी होती है तो वह याद नहीं रहती। समाचार-पत्र भी बच्चों में ज्यादा लोकप्रिय नहीं हैं। लेकिन टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले धारावाहिक बच्चों को चुंबक की तरह आकर्षित करते हैं। वे ही पाने अभिभावको को अलग-अलग स्कीम, गेम एवं उत्पाद के साथ आकर्षक उपहार से अवगत कराते हैं। [5] तमिलनाडु में हुए एक अध्ययन के अनुसार, यह निष्कर्ष निकलता है कि अभिभावकों को बहुत ही सावधान रहना चाहिए, जब बच्चे कार्टून धारावाहिक देख रहे हों। उन्हें बच्चों के साथ समय व्यतीत करना चाहिए एवं प्रतिदिन बच्चों के साथ विचार विमर्श करना चाहिए। अभिभावकों को बच्चे की गतिविधियों पर भी नजर रखनी चाहिए एवं समय-समय पर उन्हें उचित मार्गदर्शन देना व् ठीक करते रहना चाहिए। [6] सीन ब्रदर्सन कहते हैं कि बच्चों का दिमाग एक घर की तरह है, जिसे अभी बनाया जाना है। दीवारें खड़ी करनी हैं, दरवाजे लगाने हैं, छत बनानी है, बिजली का इंतजाम करना है। इसके लिए आप बिजली के तार, फ्यूज बॉक्स और अन्य उपकरण खरीदते हैं और घर लेकर आते हैं। फिर उन्हें अगर आप फर्श पर रख दें तो क्या वे काम करेंगी। नहीं, इसके लिए आपको तारों को जोड़ना पड़ेगा। ऐसे ही हमारा दिमाग काम करता है। संज्ञानात्मक विकास के दौरान प्रोत्साहन का बच्चों के दिमाग की स्थिति पर काफी प्रभाव डालता है। क्योंकि बहुत से मां-बाप बच्चों पर ध्यान नहीं देते, अनुशासन बनाकर नहीं रखते। [7]

आंकड़ों के संग्रहण हेतु समष्टि और प्रतिदर्श: सभी पक्षों को ध्यान में रखकर ही शोध अध्ययन के लिए सामग्री का संकलन किया गया है। प्रस्तुत शोध द्विआयामी है, जिसमें अभिभावक तथा बच्चे दोनों ही अन्योन्याश्रित हैं। अस्तु, सामग्री का संकलन इसी आधार पर एवं तथ्यों को ध्यान में रखकर किया गया है, जो निम्नलिखित हैं:-

हरियाणा प्रदेश को छह मंडलों में बांटा गया है- करनाल, अंबाला, हिसार, रोहतक, फरीदाबाद, गुरुग्राम। करनाल मंडल में करनाल, कैथल और पानीपत जिले आते हैं। अंबाला मंडल में अंबाला, पंचकूला, यमुनानगर और कुरुक्षेत्र जिले आते हैं। हिसार मंडल में हिसार, जींद, फतेहाबाद और सिरसा जिले आते हैं। रोहतक मंडल में रोहतक, सोनीपत, झज्जर, भिवानी, चरखी दादरी जिले आते हैं। फरीदाबाद मंडल में फरीदाबाद, मेवात और पलवल जिले आते हैं। गुरुग्राम मंडल में गुरुग्राम, रेवाड़ी और महेंद्रगढ़ जिले आते हैं।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए आंकड़े संग्रहित करने हेतु प्रत्येक मंडल से 30 निजी और 30 सरकारी स्कूलों का चयन किया गया। इन स्कूलों के 360 बच्चों व् उनके अभिभावकों से प्रश्नावली माध्यम का इस्तेमाल करके आंकड़े एकत्रित किए गए।

अध्ययन विश्लेषणः बच्चों में संस्कार और समाज के प्रति आचार व्यवहार करने में उन्हें दीक्षित करने का काम मुख्यतः परिवार का होता है। परिवार ही इंसान को मनोवैज्ञनिक सुरक्षा प्रदान करता है। परिवार ही इंसान को सहानुभूति, प्रेम, स्नेह, आदर और सम्मान जैसी भावनाओं को विकसित करने में सहयोग करता है। इसलिए परिवार एकाकी हो या संयुक्त, बच्चों की मानसिकता, उनके आचार-विचार और व्यवहार पर परिवार का असर पड़ता ही है। इसलिए यह जानना आवश्यक है कि कार्टून धारावाहिक देखने वाले बच्चों की अभिरुचियां उनके परिवार के स्वरूप के कारण कितनी प्रभावित हो रही हैं। इसके लिए अभिभावकों से प्रस्तुत शोध की कार्ययोजना के मुताबिक, एक प्रश्नावली के तहत कुछ सवाल पूछे गए।

अभिभावकों ने जिस तरह से इन सवालों के जवाब दिए, उससे निष्कर्ष निकलता है कि अधिकतर बच्चे एकल परिवार और कम बच्चे संयुक्त परिवार में पल बढ़ रहे हैं। संयुक्त परिवार में स्वास्थ्य संबंधी समस्या हो या आर्थिक सामाजिक सुरक्षा संबंधी, सभी मिलकर इसे वहन करते हैं। बच्चों के खेलने के लिए परिवार के सदस्य ही दोस्त बन जाते हैं। जबकि एकाकी परिवार में ऐसा नहीं होता। एकाकी परिवार में बच्चे ज्यादातर समय टेलीविजन देखने में बिताते हैं। संयुक्त परिवार में बच्चों का परस्पर संवाद कहीं न कहीं बना रहता है। वह कई ऐसे खेल खेलते हैं, जिन्हें खेलने के लिए परिवार की आवश्यकता होती है, जैसे- कथा-कहानी, अंताक्षरी आदि । बच्चे दादा-दादी व् नाना- नानी की कहानियों को मनोरंजन का साधन मानते हैं, परंतु आधुनिक दौर में एकल परिवारों की अधिकता के कारण इनकी जगह कार्टून धारावाहिकों, म्यूजिक सिस्टम और ऑनलाइन गेम्स ने ले ली है।

अधिकतर अभिभावक इस बात से सहमत हैं कि घर पर अकेले होने के कारण बच्चा टेलीविजन देखता है। दरअसल, बढ़ती महत्वाकांक्षाओं ने संयुक्त परिवारों को विखंडित किया है। इसलिए बच्चे रुचि के अनुसार और समय के अनुसार टेलीविजन देखना पसंद करते हैं। बचपन के दिन कल्पनाओं एवं सपनों की दुनिया से भरपूर होते हैं। बचपन में खेलना कभी खत्म नहीं होता। इसके अलावा ड्राइंग करना, शरारतें करना, लड़ना-झगड़ना, जिद करना आदि में बच्चों को बहुत मजा आता है। इन्हीं सब का एक हिस्सा होते हैं कार्टून

धारावाहिक देखना, क्योंकि कार्टूनों की दुनिया में भी वही सब होता है, जैसी जिंदगी जीने की वे कल्पना करते हैं। उन्हें अपनी जिंदगी में देखते हैं और महसूस करते हैं। इसलिए प्रस्तुत शोध से निष्कर्ष निकलता है कि इसी वजह से अधिकतर बच्चे कार्टून धारावाहिक देखते हैं, जबकि कार्टून धारावाहिकों की अपेक्षा कम ही बच्चे अन्य हिन्दी धारावाहिक देखते हैं। रुचि के अनुसार बच्चे खेल संबंधी कार्यक्रम भी देखते हैं और कुछ बच्चों की रुचि फिल्में देखने में भी होती है। विशेष उल्लेखनीय है कि बच्चों की कार्टून धारावाहिक देखने में रुचि इसलिए होती है, क्योंकि मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर ही निर्माता कार्टून धारावाहिक व् चरित्र बनाते हैं।

अब प्रश्न यह उठता है कि बच्चा टेलीविजन पर किस तरह के कार्टून देखना पसंद करता है और क्या यह उसकी मानसिकता पर असर डालता है? टेलीविजन मनोरंजन का सशक्त माध्यम है। टीवी पर प्रसारित होने वाले कार्टून धारावाहिक बच्चों के मनोरंजन का सशक्त माध्यम हैं। जब अभिभावकों से इस बारे में सवाल पूछा गया तो निष्कर्ष निकला कि कुछ बच्चे हंसाने वाले और कुछ बच्चे एक्शन से भरपूर मार धाड़ वाले या सुपर हीरो वाले कार्टून धारावाहिक देखना पसंद करते हैं। बच्चों की रुचि कहानियों पर आधारित और शिक्षाप्रद धारावाहिक देखने में भी है, इस बात को नकारा नहीं जा सकता। प्रतिशतता के आधार पर हम कह सकते हैं कि अधिकतर बच्चों के पसंदीदा कार्टून सीरियल छोटा भीम, टॉम एंड जेरी, रोल नंबर 21, बंदबुद्धि और बुडबक हैं, जो उन्हें बेहद दिलचस्प और मजेदार लगते हैं।

बचपन में बालक बुद्धि इतनी विकसित नहीं होती है कि वह वास्तविकता और काल्पनिकता में अंतर कर सके। बच्चा हर काम अपनी मर्जी से करता है, क्योंकि कार्टून धारावाहिक बाल मानसिकता में उत्पन्न काल्पनिकता को वास्तविक रूप देते हैं, इसलिए वह कार्टून धारावाहिक देखना पसंद करता है। प्रस्तुत शोध से यह स्थिति स्पष्ट होती है कि बच्चे जब कार्टून धारावाहिक देख रहे होते हैं और उन्हें साथ में कोई अन्य काम करने के लिए कहा जाता है तो अधिकतर बच्चों को यह अच्छा नहीं लगता। उनमें गुस्से की भावना जागृत हो जाती है। कुछ बच्चे इस पर ध्यान नहीं देते। वहीं कम ही बच्चों को ऐसा होने पर गुस्सा आता है। इसका मतलब है कि कार्टून धारावाहिक देखने से कहीं न कहीं बच्चों के व्यवहार में बदलाव आ रहा है। उनमें गुस्सा करने की प्रवृत्ति जन्म ले रही है। जीवन में सभी कार्य आवश्यक होते हैं, बच्चों को ऐसी शिक्षा हम बाल्यकाल से ही देना शुरू कर देते हैं। लेकिन साथ में मनोरंजन भी जरूरी है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि यदि मनोरंजन करने के साथ-साथ कुछ और भी जन्म ले रहा है तो हमें उस तरफ भी ध्यान देना चाहिए।

प्रायः देखा गया है कि कार्टून धारावाहिकों में कुछ शब्दों को एवं किसी तरह के व्यवहार को बार-बार दर्शाया जाता है। इसका असर बच्चों के व्यवहार में भी देखने को मिलता है। इसलिए कुछ अभिभावकों का मानना है कि बच्चे कार्टून चरित्र की नकल करते हुए उनके जैसा ही व्यवहार करते हैं और वैसी ही भाषा का प्रयोग करते हैं। कम ही अभिभावकों का जवाब न में था। कुछ अभिभावक इस बात से सहमत हुए कि बच्चे कभी-कभी ही ऐसा करते हैं। अधिकतर बच्चे कार्टून चरित्र की नकल करते हैं। ज्यादातर बच्चे विशेष वाक्यों को ही दोहराते हैं, लेकिन तब जब वे उस तरह का कार्य कर रहे होते हैं। कुछ बच्चे ऐसा नहीं करते। कुछ बच्चे कभी-कभी ही उन वाक्यों को दोहराते हैं, जिन्हें उनके पसंदीदा कार्टून चरित्र बार-बार इस्तेमाल करते हैं।

कार्टून धारावाहिकों में चरित्रों को बड़े ही मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है और अपना किरदार निभाते हुए वे कुछ खास चीजों का इस्तेमाल करते हैं, जो बच्चों को भी काफी आकर्षित करती हैं। जैसे- छोटा भीम का लड्डू, कलरी किड्स के मार्शल आर्ट्स, बेनटेन की घड़ी, शिवा की साइकिल आदि। इनके माध्यम से बच्चे अपनी काल्पनिक दुनिया को सजीव करते हैं। यही कारण है बच्चे जिनके व्यक्तित्व से प्रभावित होते हैं, उनमें माता-पिता और शिक्षकों के साथ अब कार्टून धारावाहिक व कार्टून चरित्र भी शामिल हो गए हैं। जिस प्रकार वह माता-पिता और शिक्षकों के व्यक्तित्व व उनकी बातों, आदतों को ग्रहण करते हैं, उसी तरह वे कार्टून धारवाहिकों व कार्टून चरित्रों का भी अनुसरण करते हैं। बच्चों को जो कार्टून चरित्र पसंद होता है, उन्हें उसकी वेशभूषा, भाषा और उसके द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली चीजें भी बेहद पसंद होती हैं। अधिकतर अभिभावक इस बात से सहमत हैं कि बच्चों के पसंदीदा कार्टून चरित्र के खाने पीने के तरीके व स्वभाव को जिस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है, उससे बच्चों का खान-पान प्रभावित होता है। कुछ अभिभावक यह नहीं मानते हैं। कुछ अभिभावक कहते हैं कि ऐसा कभी-कभी ही होता है। बच्चों के पास पसंदीदा कार्टून चरित्र से संबंधित वेशभूषा, खिलौने और अन्य वस्तुएं प्रचुर मात्रा में होती हैं और वह ऐसी ही चीजें खरीदना पसंद करते हैं।

शारीरिक एवं सामाजिक विकास के लिए बच्चों का बाहर खेलना अत्यंत आवश्यक हैं। लेकिन रोजमर्रा की भागदौड़ और एकल परिवारों के कारण बच्चे घर की चारदिवारी और टीवी तक सीमित रह गए हैं। कोमल प्रवृत्ति होने के कारण बच्चों ने भी इसे अपनाया और अपनी रुचि भी जताई। इसका कारण ये है कि हमने बच्चों को जैसा सिखाया, उन्होंने वैसा ही सीखा। फिर भी अधिकतर अभिभावकों का मानना है कि उनका बच्चा घर से बाहर जाकर दोस्तों से मिलता जुलता है और खेलता है। कुछ अभिभावकों का मानना है कि उनका बच्चा बाहर खेलने के लिए नहीं जाता। कुछ अभिभावकों का मानना है कि बच्चे कभी-कभार बाहर खेलने जाते हैं, या हम खुद ही उन्हें बाहर खिलाने ले जाते हैं।

कार्टून चरित्र काल्पनिक होते हैं, लेकिन बच्चों को वे सजीव लगते हैं, क्योंकि निर्माता उन्हें प्रस्तुत ही ऐसे तरीके से करते हैं कि वे सजीव ही प्रतीत होते हैं और अपने इसी स्वरूप में वे बच्चों का मनोरंजन करते हैं। ऐसे में बच्चों के मन में भावना आती है कि वे भी कार्टून चरित्रों जैसे बने। इसके चलते कई बार बच्चे कार्टून चरित्रों की नकल करने लगते हैं। उनके जैसा व्यवहार, आदतें, चलना, हरकतें करना आदि उन्हें अच्छा लगता है। कई बार ऐसा करते हुए वे दुर्घटना का शिकार हो जाते हैं। उन्हें चोट लग जाती है, लेकिन फिर भी वे नकल करने से पीछे नहीं हटते। इस बारे में जब अभिभावकों से सवाल पूछा गया तो कुछ अभिभावकों ने माना कि उनके बच्चों ने कार्टून चरित्र की नकल करते हुए चोट खाई है। अधिकतर अभिभावकों ने इसका जवाब न में दिया। वहीं कुछ अभिभावकों का कहना है कि बच्चे कार्टून चरित्रों की नकल करते हैं, लेकिन चोट एक दो बार ही खाई है।

बच्चों के मन में अनेक सवाल होते हैं, क्योंकि बाल्य अवस्था सीखने के दौर से गुजर रही होती है। वे कुछ भी देखते हैं तो उनके मन में अनेक प्रश्न अपने आप उठते हैं। अधिकतर बच्चे बच्चे कार्टून सीरियल देखते समय सवाल पूछते हैं, जबकि कुछ बच्चे ऐसा नहीं करते हैं। वहीं ज्यादातर बच्चे कार्टून धारावाहिक से संबंधित प्रश्न ही पूछते हैं। अधिकतर अभिभावक मानते हैं कि कार्टून धारावाहिक सूचनाप्रद और जानकारियों से भरपूर होते हैं। कुछ अभिभावक ऐसा नहीं मानते। वहीं कई अभिभावक मानते हैं कि कुछ ही धारावाहिक ऐसे होते हैं। अधिकतर अभिभावक मानते हैं कि कार्टून धारावाहिकों में दिखाई जाने वाली मार धाड़ और हिंसा का बच्चों पर असर पड़ता है। जबकि कुछ अभिभावक कहते हैं कि ऐसा नहीं है। कुछ अभिभावक कहते हैं कि बहुत ज्यादा असर पड़ता है। कुछ अभिभावक कहते हैं कि कम असर पड़ता है। कुछ अभिभावक कहते हैं कि उन्होंने इस पर कभी ध्यान ही नहीं दिया।

प्रस्तुत शोध से निष्कर्ष निकला कि कुछ बच्चों को अपने पसंदीदा कार्टून चरित्र के सपने आते हैं। अधिकतर बच्चों को ऐसे सपने नहीं आते हैं। जबकि कुछ बच्चों के साथ कभी-कभी ऐसा होता है। वहीं अधिकतर अभिभावक कहते हैं कि उन्होंने इस बारे में कभी पूछा ही नहीं। इस तरफ कभी ध्यान ही नहीं दिया

और न ही बच्चों ने इस बारे में कोई जिक्र किया। बच्चों पर उनके पसंदीदा कार्टून चरित्र का प्रभाव इतना ज्यादा होता है कि खरीदारी करते समय वे वस्तु की गुणवत्ता पर ध्यान नहीं देते, बल्कि पसंद को प्राथमिकता देते हैं। इसलिए अधिकतर बच्चों के पास उनके पसंदीदा कार्टून चरित्र से संबंधित खिलौने या सामान हैं। जबकि कुछ बच्चे ऐसे खिलौने और सामान खरीदते ही नहीं।

समय की अपनी एक सीमा होती है और सभी को समयानुसार सभी काम करने पड़ते हैं। बच्चों को ज्यादातर समय स्कूल में व्यतीत होता है और घर आकर उन्हें होमवर्क व कुछ अन्य काम भी करने होते हैं। खेलना भी होता है। इसलिए अभिभावक मानते हैं कि कार्टून धारावाहिक देखने के कारण उनका स्कूल होमवर्क व अन्य कार्य प्रभावित होते हैं। अधिकतर अभिभावक ऐसा नहीं मानते हैं। कुछ बच्चों के साथ कभी-कभार ही ऐसा होता है और अधिकतर बच्चे होमवर्क करने के बाद ही कार्टून धारावाहिक देखते हैं। 21वीं सदी में विज्ञान ने जितनी प्रगति की है, उतना ही विकास इलेक्ट्रॉनिक और तकनीक के क्षेत्र में भी हुआ है। अब टीवी के अलावा कई अन्य माध्यम भी मनोरंजन का साधन बन गए हैं। इसलिए अधिकतर बच्चे अब मोबाइल पर भी पसंदीदा कार्टून धारावाहिक देखते हैं। कुछ बच्चे कंप्यूटर पर और कुछ बच्चे टैब आदि पर धारावाहिक देखते हैं। वहीं कुछ बच्चे लैपटॉप पर कार्टून सीरियल देख लेते हैं। ऐसे में वे घर में टीवी के सामने बैठकर पसंदीदा कार्टून सीरियल देखने के लिए बाध्य नहीं हैं।

ज्यादातर अभिभावक बच्चों को कार्टून धारावाहिक देखने से मना नहीं करते हैं। कुछ मना करते हैं, वहीं कुछ कभी कभार ही मना करते हैं। लेकिन ऐसा करने के पीछे कई कारण हो सकते हैं। अधिकतर अभिभावक मानते हैं कि बच्चों को यह पता होता है कि कार्टून चरित्र सजीव नहीं होते हैं। कुछ का कहना है कि वह इस बारे में कुछ नहीं कह सकते। क्योंकि इस बारे में बच्चों से उनकी कोई बातचीत नहीं हुई है। कुछ अभिभावक कहते हैं कि बच्चे मानते हैं कि कार्टून चरित्र सजीव होते हैं। वहीं अधिकतर अभिभावक मानते हैं कि बच्चे कार्टून चरित्रों द्वारा बताई गई अच्छी बातों का अनुसरण करते हैं। जबकि कुछ अभिभावक ऐसा नहीं मानते हैं। कुछ अभिभावक कहते हैं कि बच्चे कभी कभार ही ऐसा करते हैं। कार्टून चरित्र छोटा भीम द्वारा बताई जाने वाली बातों का अनुसरण अधिकतर बच्चों द्वारा किया जाता है।

अधिकतर अभिभावक मानते हैं कि जब घर में मेहमान आते हैं तो बच्चे कार्टून धारावाहिक देखना बंद कर देते हैं। कुछ अभिभावक कहते हैं कि बच्चे पहले मेहमान से मिलते हैं और उसके बाद कार्टून धारावाहिक देखने लगते हैं। कुछ बच्चे कार्टून धारावाहिक देखते रहते हैं, वहीं कुछ बच्चे टीवी वाले कमरे का दरवाजा ही बंद कर लेते हैं, लेकिन ऐसे बच्चों की संख्या कम है। कई बार परिस्थितियां ऐसी होती हैं कि बच्चे कार्टून धारावाहिक नहीं देखे पाते तो अधिकतर बच्चे कोई दूसर कार्य करने लगते हैं, लेकिन यह उस समय की परिस्थिति पर निर्भर करता है और इसका परिणाम लगभग समान ही है। इसमें बच्चे कभी कभार कोई दूसरा कार्य कर ही लेते हैं।

अधिकतर अभिभावक कहते हैं कि यदि बच्चे को कार्टून धारावाहिक देखकर कोई चीज पसंद आ गई और वो उसे चाहिए तो वह उसे उस चीज के फायदे और नुकसान जरूर बताएंगे। ऐसे अभिभावकों की प्रतिशतता बहुत कम है जो पैसे लेकर खुद बाजार जाकर चीज खरीदने की अनुमति बच्चों को देते हैं। कुछ अभिभावक खुद ही खरीदकर बच्चों को दे देते हैं, लेकिन ऐसे अभिभावकों की प्रतिशतता भी कम है। कुछ अभिभावक परिवार के किसी अन्य सदस्य को खरीद कर देने के लिए कह देते हैं। अधिकतर अभिभावक मानते हैं कि बच्चे कार्टून चरित्र का खिलौना खरीदने के लिए जिद करते हैं। क्योंकि वह इस बात को नहीं समझ सकता कि अभिभावक खिलौना खरीदकर देने में असमर्थ नहीं हैं। कुछ बच्चों को गुस्सा भी आ जाता है और कुछ इस बात से नाराज रहते हैं। वहीं ऐसे बच्चों की संख्या बहुत कम है जो कोई बात नहीं, कहकर भूल जाता है।

सुझावः अभिभावकों के दृष्टिकोण से यह ज्ञात होता है कि उन्हें कार्टून धारावाहकों में छिपे नकारात्मक प्रभावों के बारे में जानकारी नहीं होती। क्योंकि कार्टून धारावाहिक बच्चों के जीवन का अहम हिस्सा बन चुके हैं तो यह जरूरी हो जाता है कि अभिभावक भी इस तरफ ध्यान दें कि कार्टून धारावाहिकों में क्या दिखाया जा रहा है। किस तरह का कंटेंट (विषय-सामग्री) बच्चों को परोसा जा रहा है ? कहीं ये कंटेंट बच्चों के लिए हानिकारक तो नहीं ? अगर धारावाहिक में कुछ दृश्य लड़ाई-झगड़े के हैं तो अभिभावकों को उनके बारे में बच्चों को हास्यास्पद तरीके से बताना चाहिए, ताकि बच्चे उन्हें मनोरंजन के दृष्टिकोण से ही देखें। अभिभावकों को चाहिए कि वे बच्चों के साथ ज्यादा से ज्यादा समय व्यतीत करें, ताकि बच्चे मनोरंजन के लिए केवल टीवी और कार्टून धारावाहिकों पर ही निर्भर न रहें। बच्चों को कहानियां सुनाएं व उन्हें मनोरंजन के अन्य साधनों से अवगत कराएं। बच्चों को घर से बाहर जाकर दोस्तों के साथ खेलने के लिए भी प्रेरित करें। बच्चों को यह बात जरूर बताएं कि कार्टूनों की दुनिया काल्पनिक होती है। वास्तविकता से उनका परिचय कराना अत्यंत आवश्यक है। अभिभावकों को विशेष तौर पर बच्चों की तरफ ध्यान देना चाहिए। उन्हें देखना चाहिए कि बच्चे किसी चरित्र की नकल तो नहीं कर रहे या किसी तरह की गलत भाषा का इस्तेमाल तो नहीं कर रहे। उनमें ऐसी कोई गलत आदत न पनपने दें, जो कार्टून धारावाहिक में दिखाई जाती हों। हर चीज की अधिकता भी हानिकारक होती है। बाल मन बहुत ही कोमल होता है। इसलिए अभिभावकों का जिम्मेदारी बढ़ जाती है कि वे उनकी हर प्रकार से देखभाल करें। उनके मन-मस्तिष्क पर किसी तरह का नकारात्मक प्रभाव न पड़ने दें।

निष्कर्षः हम कह सकते हैं कि कार्टून धारावाहिक देखने से बच्चों पर नकारात्मक और सकारात्मक दोनों तरह के प्रभाव पड़ते हैं। लेकिन कार्टून धारावाहिक बच्चों के लिए मनोरंजन का सशक्त माध्यम भी हैं। हालांकि अभिभावक इस बात से अनभिज्ञ होते हैं कि कार्टून धारावाहिकों के कुछ नकारात्मक प्रभाव भी होते हैं, जो बच्चों पर विशेष असर डालते हैं। इसलिए उन्हें बच्चों की तरफ ध्यान देना चाहिए। बच्चे जब भी कार्टून धारावाहिक देखें तो जरूर ध्यान दें कि वह क्या देख रहे हैं ? जहां तक हो सके, अभिभावक कोशिश करें कि बच्चे कार्टून धारावाहिक कम ही देखें, ताकि उनके बच्चे स्वस्थ एवं बिना जोखिम के जीवन जी सकें।

संदर्भ सूची:

1. (पृष्ठ संख्या 28, जागरण सखी, नवंबर 2019, Sakhi@jagran.com)
2. (पृष्ठ संख्या 21, गृहशोभा, जुलाई (द्वितीय) 2019)
3. शर्मिन सुल्ताना, 2014, रोल ऑफ कार्टून: अ ब्रीफ डिस्कशन ऑन हाउ कार्टून पुट एन इंपैक्ट ऑन चिल्ड्रन, अंक 1, ईएनएच कम्युनिटी जर्नल
4. कोमल शूजा, मजहर अली, मुनाजाह महक अंजुम, अब्दुल रहीम, 2018, इफेक्टिवनेस ऑफ एनिमेटिड स्पो1स-कैरेक्टरर इन एडवर्टाइजिंग टारगेटिड टू किड्स, अंक 2, जर्नल ऑफ मार्केटिंग एंड कंज्यूमर बिहैवियर
5. नीतू जैन, रचना कौल, इंफलुएंस ऑफ मीडिया ऑन किड्स बाइंग बिहैवियर इन इन्दौर सिटी
6. पी. शांतिप्रिया, ए अनीश प्रभा, 2017, अ स्टडी ऑन पेरेंट्स परसेप्शन टूवर्ड्स चिल्ड्रन व्यूइंग कार्टून चैनल्स, जर्नल ऑफ अप्लाइड एंड एडवांसड रिसर्च
7. ब्रदर्सन एस. 2015, अंडरस्टैंडिंग ब्रेन डवलपमेंट इन यंग चिल्ड्रन, फैमिली साइंस स्पेशलिस्ट, एनडीएसयू एक्सटेंशन सर्विस

8. एंडरसन, डी.आर., लेविन, एस.आर., लोर्च, ई.पी. द इफेक्ट्स ऑफ टीवी प्रोग्राम पेसिंग ऑन द बिहैवियर ऑफ प्री-स्कूल चिल्ड्रेन, 1977.
9. हॉर्निक, आर. आउट ऑफ स्कूल टेलीविजन एंड स्कूलिंगः हाइपोथिसिस एंड मेथड्स. रिव्यू ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, 1981.
10. फुरू, टी. कग्निटिव स्टाइल एंड टेलीविजन व्यूइंग पेटनर्स ऑफ चिल्ड्रेन (रिसर्च रिपोर्ट). इंटरनेशनल क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी, डिपार्टमेंट ऑफ ऑडियो विजुअल एजूकेशन, 1977.
11. गैडबेरी, एस. इफेक्ट्स ऑफ रेस्ट्रिक्टिंग फर्स्ट ग्रेडर्स टीवी व्यूइंग ऑन लेजर टाइम यूज, आईक्यू चेंज एंड कग्निटिव स्टाइल. जर्नल ऑफ अप्लाइड डेवलपमेंट साइकोलॉजी, 1980.
12. कागन, जे. इंपलसिव एंड रिफलेक्टिव चिल्ड्रेनः सिग्निफिकेंस ऑफ कंसेप्चुअल टेंपो. इन जे.डी. क्रमबोल्ज (ईडी). लर्निंग एंड द एजूकेशनल प्रोसेस शिकागो, 1965.
13. बर्जोक्विस्ट, के. एंड लैजेर्सपेट्ज, के. चिल्ड्रेन एक्सपीरियंस ऑफ थ्री टाइप ऑफ कार्टून्स एट टू एज लेवेल्स. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइकोलॉजी, 1985.
14. एलेस, डी. बैटर ब्रेन्स फॉर बेबीज. पब्लिकेशन नंबर्स. एफएसीएस कॉलेज ऑफ फैमिली एंड कंज्यूमर साइंसेज, यूनिवर्सिटी ऑफ जॉर्जिया, 1998.
15. जेनसेन, ई. टीचिंग विद द ब्रेन इन माइंड. एसोसिएशन फॉन सुपरविजन एंड करिकुलम डेवलपमेंट, एलेक्जंड्रिया, 1998.
16. बैंड्यूरा, ए. रॉस, डी. एंड रॉस, एस.ए. विसेरियस रेनफॉर्समेंट एंड इमिटेटिव लर्निंग. जर्नल ऑफ अबनॉर्मल एंड सोशन साइकोलॉजी, 1963.
17. हेलेर, एम.एस. एंड पोलस्की, एस. स्टडीज इंन वॉयलेंस एंड टेलीविजन. अमेरिकन ब्रॉडकास्टिंग कंपनी, न्यूयार्क, 1976.
18. किर्श, एस.जे. कार्टून वॉयलेंस एंड एग्रेशन इन यूथ. एग्रेशन एंड वॉयलेंस बिहेव्यिर, 2006.